कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल
सेमेस्टर पाठ्यक्रम (बी.ए.)
भारतीय संगीत शास्त्र
कंठ संगीत
सत्र : 2017–18 से प्रभावी

Semester system course structure:

1. *The course work shall be divided into six semesters with two papers in each semester.*
2. *Each paper in a semester will be of **50 marks** out of which **35 marks** for theory and **15 marks** are allotted for internal assessment (written test or assignments or both)*
3. *Each theory paper shall consists of **section A:** 20% of total marks (multiple choice, one word/one sentence answer, fill in the blanks, true- false; all parts will be compulsory), **section B:** 40% of total marks (one question of 06 parts; any 04 have to be attempted with short answer) and **section C**: 40% of total marks; (04 questions, any two have to be attempted with long answer).*
4. *Question paper shall cover the whole syllabus.*
5. *Practical in each semester will be of total **50 marks**.*
6. *Practical examination will be evaluated by both external and internal examiner.*

महत्वपूर्ण निर्देश :– भारतीय संगीत शास्त्र (कंठ संगीत) के विद्यार्थियों के लिए दो सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र एवं एक प्रयोगात्मक (क्रियात्मक) परीक्षा अनिवार्य है।

1. सैद्धान्तिक प्रथम प्रश्न पत्र – संगीत विज्ञान — पूर्णांक – 50
   - सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र — अंक – 35
   - आन्तरिक मूल्यांकन — अंक – 15

2. सैद्धान्तिक द्वितीय प्रश्न पत्र – रागों एवं तालों का अध्ययन — पूर्णांक – 50
   - सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र — अंक – 35
   - आन्तरिक मूल्यांकन — अंक – 15

3. क्रियात्मक परीक्षा – — पूर्णांक – 50
   - प्रथम क्रियात्मक परीक्षा — अंक – 35
   - द्वितीय क्रियात्मक परीक्षा – मौखिक — अंक – 15

भारतीय संगीत शास्त्र
कंठ संगीत
बी.ए. प्रथम सेमेस्टर
सत्र : 2017–18 से प्रभावी

पूर्णांक – 50

प्रथम प्रश्न पत्र– संगीत विज्ञान **अंक – 35**

1. अधोलिखित विषयों का ज्ञान– श्रुतियाँ भरत के स्वर स्थान, सोमनाथ और भातखण्डे द्वारा विभिन्न श्रुतियों पर स्थापित सप्तक के स्वर स्थान।
2. पं0 अहोबल और श्रीनिवास द्वारा वीणा पर स्वर स्थापन के सिद्धान्त।
3. सप्तक के विभिन्न स्वरों में सांगीतिक स्वरान्तर, मेजरटोन, माइनर टोन, सेमीटोन।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

पूर्णांक – 50

द्वितीय प्रश्न पत्र– रागों और तालों का अध्ययन **अंक – 35**

1. शुद्ध, छायालग और संकीर्ण रागों का ज्ञान।
2. अधोलिखित रागों का आरोह, अवरोह, पकड़, एवं मुख्य स्वर समुदाय तथा समस्त विशेषताओं सहित विस्तृत तथा तुलनात्मक अध्ययन– बागेश्री, गौड़ सारंग, दुर्गा, देशकार।
3. आलाप के माध्यम से राग पहचानने तथा रागों में अन्तर स्पष्ट करने की क्षमता।
4. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में ख्यालों को आलाप व तान सहित स्वरलिपि में लिखने का अभ्यास।
5. ध्रुपद एवं धमार को दुगुन, तिगुन व चौगुन सहित स्वरलिपि में लिखना।
6. अधोलिखित तालों एवं उनके ठेकों को दुगुन, तिगुन तथा चौगुन में लिखने का ज्ञान– तीनताल, झपताल।
7. निम्नलिखित संगीतज्ञों का जीवन परिचय तथा उनकी देन–स्वामी हरिदास, सदारंग।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

क्रियात्मक परीक्षा **पूर्णांक – 50**

प्रथम क्रियात्मक परीक्षा– **अंक – 35**

1. अधोलिखित रागों में पूर्ण गायकी सहित द्रुत ख्याल– बागेश्री, गौड़ सारंग, दुर्गा, देशकार।
2. पाठ्यक्रम में वर्णित रागों में से किसी एक राग में विलम्बित ख्याल पूर्ण गायकी सहित गाने का अभ्यास।
3. पाठ्यक्रम के रागों में से किसी एक राग में ध्रुपद लयकारी सहित गाने की क्षमता।
4. पाठ्यक्रम के रागों में से किसी एक राग में एक धमार लयकारी सहित गाने का अभ्यास।
5. किसी राग में भजन गाने का अभ्यास।
6. परीक्षार्थी को अधोलिखित तालों का ज्ञान आवश्यक–तीनताल, झपताल।

द्वितीय क्रियात्मक परीक्षा– मौखिक **अंक – 15**

भारतीय संगीत शास्त्र
कंठ संगीत
बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर
सत्र : 2017–18 से प्रभावी

पूर्णांक – 50

प्रथम प्रश्न पत्र– संगीत विज्ञान **अंक – 35**

1. सम्बनता और विम्बनता।
2. ग्राम, जाति गायन, मूर्च्छना, न्यास, सन्यास, विन्यास, स्वस्थान नियम।
3. संगीत सम्बन्धी सामान्य विषयों पर संक्षिप्त निबन्ध लिखने का अभ्यास।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

पूर्णांक – 50

द्वितीय प्रश्न पत्र– रागों और तालों का अध्ययन **अंक – 35**

1. गीत, गान्धर्व, गान देशी तथा मार्गी संगीत का ज्ञान।

2. अधोलिखित रागों के आरोह, अवरोह, पकड़, एवं मुख्य स्वर समुदाय तथा समस्त विशेषताओं सहित विस्तृत तथा तुलनात्मक अध्ययन– जैजैवन्ती, शंकरा, हिंडोल, कामोद।

3. आलाप के माध्यम से राग पहचानने तथा रागों में अन्तर स्पष्ट करने की क्षमता।

4. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में ख्यालों को आलाप व तान सहित स्वरलिपि में लिखने का अभ्यास।
5. ध्रुपद एवं धमार को दुगुन, तिगुन व चौगुन सहित स्वरलिपि में लिखना।
6. अधोलिखित तालों एवं उनके ठेकों को दुगुन, तिगुन तथा चौगुन में लिखने का ज्ञान– चारताल, तिलवाड़ा।
7. निम्नलिखित संगीतज्ञों का जीवन परिचय तथा उनकी देन–अदारंग, पं0 भातखण्डे, अमीर खुसरो।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

क्रियात्मक परीक्षा

पूर्णांक – 50

प्रथम क्रियात्मक परीक्षा– **अंक – 35**

1. अधोलिखित रागों में पूर्ण गायकी सहित द्रुत ख्याल– जैजैवन्ती, शंकरा, हिंडोल, कामोद।
2. पाठ्यक्रम में वर्णित रागों में से किसी एक राग में विलम्बित ख्याल पूर्ण गायकी सहित गाने का अभ्यास।
3. पाठ्यक्रम के रागों में से किसी एक राग में एक ध्रुपद लयकारी सहित गाने की क्षमता।

4. पाठ्यक्रम के रागों में से किसी एक राग में एक धमार लयकारी सहित गाने का अभ्यास।
5. किसी राग में एक तराना गाने का अभ्यास।
6. परीक्षार्थी को अधोलिखित तालों का ज्ञान आवश्यक–चारताल, तिलवाड़ा।

द्वितीय क्रियात्मक परीक्षा– मौखिक **अंक – 15**

भारतीय संगीत शास्त्र
कंठ संगीत
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर
सत्र : 2017–18 से प्रभावी

पूर्णांक – 50

प्रथम प्रश्न पत्र– संगीत विज्ञान **अंक – 35**

1. भातखण्डे तथा विष्णु दिगम्बर स्वरलिपि पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन।
2. प्राचीन तथा मध्यकालीन भारतीय संगीत का संक्षिप्त इतिहास।
3. उत्तर भारतीय तथा दक्षिण भारतीय संगीत के स्वरों और तालों का तुलनात्मक अध्ययन।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

पूर्णांक – 50

द्वितीय प्रश्न पत्र– रागों और तालों का अध्ययन **अंक – 35**

1. अधोलिखित विषयों का ज्ञान– निबद्ध गान, अनिबद्ध गान, रागालाप, रूपकालाप, आलप्तिगान, अल्पत्व एवं बहुत्व, त्रिवट।
2. राग वर्गीकरण का सविस्तार अध्ययन।
3. अधोलिखित रागों का आरोह, अवरोह, पकड़ एवं मुख्य स्वर समुदायों तथा समस्त विशेषताओं सहित विस्तृत अध्ययन– शुद्ध कल्याण, बहार, छायानट, मियाँ मल्हार।

4. आलाप के माध्यम से राग पहचानने तथा रागों में अन्तर स्पष्ट करने की क्षमता।
5. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में आलाप, तान एवं बोलतान सहित ख्यालों को स्वरलिपि में लिखने की योग्यता।
6. ध्रुपद तथा धमार को दुगुन, तिगुन और चौगुन सहित स्वरलिपि में लिखना।
7. अधोलिखित तालों को उनके ठेके सहित दुगुन, तिगुन और चौगुन की लयकारी में लिखने की क्षमता– कहरवा, रूपक।
8. निम्नलिखित संगीतज्ञों का जीवन परिचय तथा उनकी देन–तानसेन, पं0 विष्णु दिगम्बर पलुस्कर।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

क्रियात्मक परीक्षा

पूर्णांक – 50

प्रथम क्रियात्मक परीक्षा– **अंक – 35**

1. अधोलिखित रागों में पूर्ण गायकी सहित द्रुत ख्याल– शुद्ध कल्याण, बहार, छायानट, मियाँ मल्हार।
2. पाठ्यक्रम में वर्णित रागों में से किसी एक राग में विलम्बित ख्याल पूर्ण गायकी सहित गाने का अभ्यास।
3. पाठ्यक्रम के रागों में से किसी एक राग में ध्रुपद लयकारी सहित।
4. पाठ्यक्रम के रागों में से किसी एक राग में एक धमार लयकारी सहित।
5. पाठ्यक्रम के किसी राग में भजन गाने का अभ्यास।
6. अधोलिखित तालों का ज्ञान आवश्यक–कहरवा, रूपक।

द्वितीय क्रियात्मक परीक्षा– मौखिक **अंक – 15**

भारतीय संगीत शास्त्र
कंठ संगीत
बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर
सत्र : 2017–18 से प्रभावी

पूर्णांक – 50

प्रथम प्रश्न पत्र– संगीत विज्ञान **अंक – 35**

1. हारमनी एवं मैलोडी में अन्तर।
2. संगीत सम्बन्धी विषयों पर संक्षिप्त निबन्ध लिखने का अभ्यास।
3. ध्रुपद, धमार, ख्याल, टप्पा, ठुमरी गायन शैलियों का विस्तृत अध्ययन।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

पूर्णांक – 50

द्वितीय प्रश्न पत्र– रागों और तालों का अध्ययन **अंक – 35**

1. अधोलिखित विषयों का ज्ञान– अर्विभाव–तिरोभाव, आलाप का स्वस्थान नियम, आधुनिक आलाप गायन, तराना, चतुरंग।
2. अधोलिखित रागों का आरोह, अवरोह, पकड़, एवं मुख्य स्वर समुदाय तथा समस्त विशेषताओं सहित विस्तृत तथा तुलनात्मक अध्ययन– गौड मल्हार, रामकली, दरबारी, पूरिया धनाश्री।
3. आलाप के माध्यम से राग पहचानने तथा रागों में अन्तर स्पष्ट करने की क्षमता।
4. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में आलाप, तान एवं बोलतान सहित ख्यालों को स्वरलिपि में लिखने की योग्यता।
5. ध्रुपद एवं धमार को दुगुन, तिगुन व चौगुन सहित स्वरलिपि में लिखना।
6. अधोलिखित तालों एवं उनके ठेकों को दुगुन, तिगुन तथा चौगुन की लयकारी में लिखने की क्षमता– धमार, सूलताल।
7. निम्नलिखित संगीतज्ञों का जीवन परिचय तथा उनकी देन–पं0 ओंकारनाथ ठाकुर, भीमसेन जोशी।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

क्रियात्मक परीक्षा

पूर्णांक – 50

प्रथम क्रियात्मक परीक्षा– **अंक – 35**

1. अधोलिखित रागों में पूर्ण गायकी सहित द्रुत ख्याल– गौड मल्हार, रामकली, दरबारी, पूरिया धनाश्री।
2. पाठ्यक्रम में वर्णित रागों में से किसी एक राग में विलम्बित ख्याल पूर्ण गायकी सहित गाने का अभ्यास।
3. पाठ्यक्रम के रागों में से किसी एक राग में ध्रुपद लयकारी सहित गाने की क्षमता।
4. रागों में से किसी एक राग में एक धमार लयकारी सहित गाने का अभ्यास।
5. पाठ्यक्रम के किसी राग तराना गाने का अभ्यास।
6. अधोलिखित तालों का ज्ञान आवश्यक–धमार, सूलताल।

द्वितीय क्रियात्मक परीक्षा– मौखिक **अंक – 15**

भारतीय संगीत शास्त्र
कंठ संगीत
बी.ए. पंचम सेमेस्टर
सत्र : 2017–18 से प्रभावी

पूर्णांक – 50

प्रथम प्रश्न पत्र– संगीत विज्ञान **अंक – 35**

1. आधुनिक भारतीय संगीत का सविस्तार अध्ययन एवं इस काल के संगीत उद्धारकों की देन।
2. संगीत गायन के प्रमुख घरानों का सामान्य अध्ययन।
3. पाश्चात्य स्वरलिपि पद्धति का सामान्य ज्ञान।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

पूर्णांक – 50

द्वितीय प्रश्न पत्र– रागों और तालों का अध्ययन **अंक – 35**

द्वितीय प्रश्न पत्र– रागों और तालों का अध्ययन

1. अधोलिखित विषयों का ज्ञान– नायक, गायक, गन्धर्व, पण्डित, संगीत शास्त्रकार।

2. अधोलिखित रागों का आरोह, अवरोह, पकड़, एवं मुख्य स्वर समुदाय तथा समस्त विशेषताओं सहित विस्तृत अध्ययन– देशी, मुल्तानी, शुद्ध सारंग, बसन्त।

3. आलाप के माध्यम से राग पहचानने तथा रागों में अन्तर स्पष्ट करने की क्षमता।

4. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में आलाप, तान एवं बोलतान सहित ख्यालों को स्वरलिपि में लिखने की योग्यता।
5. ध्रुपद एवं धमार को दुगुन, तिगुन व चौगुन सहित स्वरलिपि में लिखना।
6. अधोलिखित तालों एवं उनके ठेकों को दुगुन, तिगुन तथा चौगुन में लिखना– आड़ा चौताल, दीपचंदी।
7. निम्नलिखित संगीतज्ञों का जीवन परिचय तथा उनकी देन–पं0 शारंगदेव, आचार्य कैलाश चन्द्रदेव बृहस्पति।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

क्रियात्मक परीक्षा

पूर्णांक – 50

प्रथम क्रियात्मक परीक्षा– **अंक – 35**

1. अधोलिखित रागों में पूर्ण गायकी सहित द्रुत ख्याल– देसी, मुल्तानी, शुद्ध सारंग, बसन्त।
2. पाठ्यक्रम में निर्धारित रागों में एक विलम्बित ख्याल पूर्ण गायकी सहित।
3. निर्धारित रागों में से किसी एक राग में ध्रुपद लयकारी सहित गाने की क्षमता।
4. रागों में से किसी एक राग में एक धमार लयकारी सहित गाने की योग्यता।

5. निर्धारित रागों में से किसी एक राग में भजन गाने का अभ्यास।
6. अधोलिखित तालों का ज्ञान दुगुन, तिगुन, चौगुन की लयकारियों सहित– आड़ा चौताल, दीपचन्दी।

द्वितीय क्रियात्मक परीक्षा– मौखिक **अंक – 15**

भारतीय संगीत शास्त्र
कंठ संगीत
बी.ए. षष्टम सेमेस्टर
सत्र : 2017–18 से प्रभावी

पूर्णांक – 50

प्रथम प्रश्न पत्र– संगीत विज्ञान **अंक – 35**

1. पाश्चात्य संगीत सम्बन्धी परिभाषिक शब्दों का ज्ञान–
   पाश्चात्य संगीत में टाइम सिगनेचर (Time Signature), स्केल (Scale), स्वर सप्तक, कार्ड (Chord)।
2. भारतीय संगीत में सांगीतिक और असांगीतिक ध्वनियों एवं प्रतिध्वनि का अध्ययन।
3. संगीत सम्बन्धी विषयों पर संक्षिप्त निबन्ध लिखने का अभ्यास।
4. प्रबन्ध शैली का विस्तृत परिचय।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

पूर्णांक – 50

द्वितीय प्रश्न पत्र– रागों और तालों का अध्ययन **अंक – 35**

1. अधोलिखित विषयों का ज्ञान– संगीत शिक्षक, कव्वाल, वाग्गेयकारं, खमसा, लावनी।

2. अधोलिखित रागों का आरोह, अवरोह, पकड़, एवं मुख्य स्वर समुदाय तथा समस्त विशेषताओं सहित विस्तृत अध्ययन– विभास, अड़ाना, पूरिया, परज, ललित।

3. आलाप के माध्यम से राग पहचानने तथा रागों में अन्तर स्पष्ट करने की क्षमता।
4. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में आलाप, तान एवं बोलतान सहित ख्यालों को स्वरलिपि में लिखने की योग्यता।

5. ध्रुपद एवं धमार को दुगुन, तिगुन व चौगुन सहित स्वरलिपि में लिखना।
6. अधोलिखित तालों एवं उनके ठेकों को दुगुन, तिगुन तथा चौगुन में लिखना– पंजाबी, झूमरा।
7. निम्नलिखित संगीतज्ञों का जीवन परिचय तथा उनकी देन–उस्ताद अब्दुल करीम खाँ, उस्ताद फैयाज खाँ, उस्ताद अमीर खाँ।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

क्रियात्मक परीक्षा

पूर्णांक – 50

प्रथम क्रियात्मक परीक्षा– **अंक – 35**

1. अधोलिखित रागों में पूर्ण गायकी सहित द्रुत ख्याल– विभास अड़ाना, पूरिया, परज, ललित।
2. पाठ्यक्रम में निर्धारित रागों में एक विलम्बित ख्याल पूर्ण गायकी सहित।
3. निर्धारित रागों में से किसी एक राग में ध्रुपद लयकारी सहित गाने की क्षमता।
4. पाठ्यक्रम के रागों में से किसी एक राग में एक धमार लयकारी सहित गाने की योग्यता।
5. निर्धारित रागों में से किसी एक राग में तराना गाने का अभ्यास।
6. अधोलिखित तालों का ज्ञान दुगुन, तिगुन, चौगुन की लयकारियों सहित– पंजाबी, झूमरा।

द्वितीय क्रियात्मक परीक्षा– मौखिक **अंक – 15**

कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल
सेमेस्टर पाठ्यक्रम (बी.ए.)
भारतीय संगीत शास्त्र
वर्ग–अ : (वाद्य संगीत)
सत्र : 2017–18 से प्रभावी

महत्वपूर्ण निर्देश :– भारतीय संगीत शास्त्र वर्ग अ (वाद्य संगीत) के विद्यार्थियों के लिए दो सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र एवं एक प्रयोगात्मक (क्रियात्मक) परीक्षा अनिवार्य है।

4. सैद्धान्तिक प्रथम प्रश्न पत्र – संगीत विज्ञान — पूर्णांक – 50
   - सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र — अंक – 35
   - आन्तरिक मूल्यांकन — अंक – 15

5. सैद्धान्तिक द्वितीय प्रश्न पत्र – रागों एवं तालों का अध्ययन — पूर्णांक – 50
   - सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र — अंक – 35
   - आन्तरिक मूल्यांकन — अंक – 15

6. क्रियात्मक परीक्षा – — पूर्णांक – 50
   - प्रथम क्रियात्मक परीक्षा — अंक – 35
   - द्वितीय क्रियात्मक परीक्षा –मौखिक — अंक – 15

भारतीय संगीत शास्त्र

वाद्य संगीत

बी. ए. प्रथम सेमेस्टर

सत्र : 2017–18 से प्रभावी

वर्ग अ : तन्त्र एवं सुषिर वाद्य (वीणा, सरोद, सितार, इसराज, गिटार, वायलिन और बाँसुरी)

पूर्णांक – 50

प्रथम प्रश्न पत्र– संगीत विज्ञान — अंक – 35

1. श्रुतियों तथा भरत के स्वर स्थान, सोमनाथ और भातखण्डे द्वारा विभिन्न श्रुतियों पर स्थापित सप्तक के स्वर स्थान का ज्ञान।
2. पं0 अहोबल और श्रीनिवास द्वारा वीणा पर स्वर स्थापन के सिद्धान्त।
3. सप्तक के विभिन्न स्वरों से सांगीतिक स्वरांतर, मेजरटोन, माइनर टोन, सेमीटोन।
4. सम्बनता और विम्बनता।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

पूर्णांक – 50

द्वितीय प्रश्न पत्र– रागों और तालों का अध्ययन **अंक – 35**

1. अधोलिखित रागों के आरोह, अवरोह, पकड़, मुख्य स्वर समूह एवं सम्पूर्ण विशेषताओं सहित विस्तृत तथा तुलनात्मक अध्ययन– यमन, अल्हैया बिलावल, काफी।
2. शुद्ध, छायालग एवं संकीर्ण राग, गीत आदि विषयों का ज्ञान।
3. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में आलाप के माध्यम से राग रूप पहचानने तथा रागों में अन्तर स्पष्ट करने की योग्यता।
4. गतों को तोड़ों तथा झाला सहित स्वरलिपि मे लिखने का अभ्यास।
5. अधोलिखित तालों एवं उनके ठेकों को विभिन्न लयकारियों में लिखने की क्षमता–तीनताल, झपताल।
6. निम्नलिखित संगीतज्ञों की जीवनी एवं उनकी देन–तानेसेन, वजीर खाँ।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

क्रियात्मक परीक्षा

पूर्णांक – 50

प्रथम क्रियात्मक परीक्षा– **अंक – 35**

1. अधोलिखित रागों में एक–एक रजाखानी गत, तोड़े तथा झाला सहित– यमन, अल्हैया बिलावल, काफी।
2. पाठ्यक्रम के रागों में एक मसीतखानी गत तथा तोड़े।

3. पाठ्यक्रम के रागों में से किन्हीं दो रागों में आलाप एवं जोड़ आलाप बजाने की क्षमता।
4. अधोलिखित तालों का ज्ञान आवश्यक – तीनताल, झपताल।

द्वितीय क्रियात्मक परीक्षा– मौखिक **अंक – 15**

भारतीय संगीत शास्त्र
वाद्य संगीत
बी. ए. द्वितीय सेमेस्टर
सत्र : 2017–18 से प्रभावी

वर्ग अ : तन्त्र एवं सुषिर वाद्य (वीणा, सरोद, सितार, इसराज, गिटार, वायलिन और बाँसुरी)

पूर्णांक – 50

प्रथम प्रश्न पत्र– संगीत विज्ञान **अंक – 35**

1. न्यास, सन्यास, विन्यास, जाति गायन, ग्राम और मूर्च्छना का ज्ञान।
2. अधोलिखित की परिभाषा– घसीट, क्रन्तन, गमक, सूत, गत और कम्पन्न।
3. मिजराब या जवा द्वारा विभिन्न लयकारियों का ज्ञान।
4. संगीत सम्बन्धी सामान्य विषयों पर संक्षिप्त निबन्ध लिखना।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

पूर्णांक – 50

द्वितीय प्रश्न पत्र– रागों और तालों का अध्ययन **अंक – 35**

1. अधोलिखित रागों के आरोह, अवरोह, पकड़, मुख्य स्वरसमूह एवं सम्पूर्ण विशेषताओं
2. सहित विस्तृत तथा तुलनात्मक अध्ययन– भोपाली, वृंदावनी सारंग, खमाज। गान्धर्व, गान, देशी तथा मार्गी संगीत का ज्ञान।
3. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में आलाप के माध्यम से रागरूप पहचानने तथा रागों में अन्तर स्पष्ट करने की योग्यता।
4. गतों को तोड़ों तथा झाला सहित स्वरलिपि में लिखने का अभ्यास।

5. अधोलिखित तालों एवं उनके ठेकों को विभिन्न लयकारियों में लिखने की क्षमता– एकताल, चौताल, आडा चौताल।
6. निम्नलिखित संगीतज्ञों की जीवनी एवं उनकी देन–पन्नालाल घोष, प्रो0 बी0डी0 जोग।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

क्रियात्मक परीक्षा

पूर्णांक – 50

प्रथम क्रियात्मक परीक्षा– **अंक – 35**

1. अधोलिखित रागों में एक–एक रजाखानी गत, तोड़े तथा झाला सहित– भोपाली, वृंदावनी सारंग, खमाज।
2. उपर्युक्त वर्णित रागों में एक मसीतखानी गत तथा तोड़े।
3. पाठ्यक्रम के रागों में से किन्हीं दो रागों में आलाप एवं जोड़ आलाप बजाने की क्षमता।
4. अधोलिखित तालों का ज्ञान आवश्यक– एक ताल, चौताल, आड़ा चौताल।

द्वितीय क्रियात्मक परीक्षा– मौखिक **अंक – 15**

भारतीय संगीत शास्त्र

वाद्य संगीत

बी. ए. तृतीय सेमेस्टर

सत्र : 2017–18 से प्रभावी

वर्ग अ : तन्त्र एवं सुषिर वाद्य (वीणा, सरोद, सितार, इसराज, गिटार, वायलिन और बाँसुरी)

पूर्णांक – 50

प्रथम प्रश्न पत्र– संगीत विज्ञान **अंक – 35**

1. भातखण्डे तथा विष्णु दिगम्बर स्वरलिपि पद्धतियों का तुलनात्मक अध्ययन।

2. प्राचीन तथा मध्यकालीन भारतीय संगीत का संक्षिप्त इतिहास।
3. राग वर्गीकरण।
4. उत्तर तथा दक्षिण भारतीय संगीत पद्धतियों के स्वरों और तालों का तुलनात्मक अध्ययन।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

पूर्णांक – 50

द्वितीय प्रश्न पत्र– रागों और तालों का अध्ययन **अंक – 35**

1. अधोलिखित रागों के आरोह, अवरोह, पकड़, मुख्य स्वर समुदाय एवं समुदाय सम्पूर्ण
2. विशेषताओं सहित विस्तृत एवं तुलनात्मक अध्ययन– यमन कल्याण, मालकौंस, मियां की तोड़ी।

2. जोड़, आलाप, जमजमा, झाला, लाग–डांट, तार परन तथा लड़गुथाव की परिभाषाएँ
3. अधोलिखित तालों को उनके ठेकों सहित दुगुन, तिगुन और चौगुन में लिखने की योग्यता– कहरवा, सूलताल।
4. पं0 विष्णु दिगम्बर पलुस्कर, इनायत खाँ का जीवन परिचय और संगीत में उनकी देन।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

क्रियात्मक परीक्षा

पूर्णांक – 50

प्रथम क्रियात्मक परीक्षा– **अंक – 35**

1. अधोलिखत रागों में एक–एक रजाखानी गत, तोड़े तथा झाला, सहित– यमन कल्याण मालकौंस, मियां की तोड़ी।
2. उपर्युक्त वर्णित रागों में से किसी एक में मसीतखानी गत तथा तोड़े।
3. पाठ्यक्रम के रागों में से किन्हीं दो रागों में आलाप एवं जोड़ आलाप बजाने की क्षमता।
4. पाठ्यक्रम के किन्हीं दो रागों में एक लाइट धुन बजाना।

5. निम्नलिखित तालों को ठाह दुगुन, तिगुन एवं चौगुन में ताली देकर बोलना–कहरवा, सूलताल।

द्वितीय क्रियात्मक परीक्षा– मौखिक **अंक – 15**

भारतीय संगीत शास्त्र

वाद्य संगीत

बी. ए. चतुर्थ सेमेस्टर

सत्र : 2017–18 से प्रभावी

वर्ग अ : तन्त्र एवं सुषिर वाद्य (वीणा, सरोद, सितार, इसराज, गिटार, वायलिन और बाँसुरी)

पूर्णांक – 50

प्रथम प्रश्न पत्र– संगीत विज्ञान **अंक – 35**

1. हारमनी एवं मैलोडी में अन्तर।
2. वाद्यों का इतिहास।
3. भारतीय वाद्यों का वर्गीकरण।
4. संगीत सम्बन्धी विषयों पर संक्षिप्त निबन्ध लिखना।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

पूर्णांक – 50

द्वितीय प्रश्न पत्र– रागों और तालों का अध्ययन **अंक – 35**

1. अधोलिखित रागों के आरोह, अवरोह, पकड, मुख्य स्वर समुदाय एवं सम्पूर्ण विशेषताओं
2. सहित विस्तृत एवं तुलनात्मक अध्ययन– श ुद्ध सारंग, भीमपलासी, बागेश्री, कामोद।
3. निम्नलिखित विषयों का ज्ञान– राग–लक्षण, निबद्ध गान, अनिबद्ध गान, रागालाप,
4. रूपकालाप, आलप्ति, अल्पत्व–बहुत्व, आर्विभाव–तिरोभाव, आलाप का स्वस्थान नियम, आधुनिक आलाप गायन, प्रबन्ध, ध्रुपद, धमार, ख्याल, टप्पा, ठुमरी, तराना, त्रिवट और चतुरंग।

5. अधोलिखित तालों को उनके ठेकों सहित दुगुन, तिगुन और चौगुन में लिखने की योग्यता– रूपक, धमार।
6. अमृत्यसेन और अलाउद्दीन खाँ का जीवन परिचय तथा संगीत में उनकी देन।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

क्रियात्मक परीक्षा

पूर्णांक – 50

प्रथम क्रियात्मक परीक्षा– **अंक – 35**

1. अधोखित रागों में एक–एक रजाखानीगत, तोड़े तथा झाला, सहित– श ुद्ध सारंग, भीमपलासी, बागेश्री, कामोद।
2. उपर्युक्त वर्णित रागों में से किसी एक राग में मसीतखानी गत तथा तोड़े।
3. वर्णित रागों में से किन्हीं दो रागों में आलाप एवं जोड़–आलाप बजाने की क्षमता।
4. पाठ्यक्रम के किन्हीं दो रागों में एक लाइट धुन बजाना।
5. निम्नलिखित तालों को ठाह, दुगुन , तिगुन एवं चौगुन में ताली देकर बोलना–रूपक, धमार।

द्वितीय क्रियात्मक परीक्षा– मौखिक **अंक – 15**

भारतीय संगीत शास्त्र

वाद्य संगीत

बी. ए. पंचम सेमेस्टर

सत्र : 2017–18 से प्रभावी

वर्ग अ : तन्त्र एवं सुषिर वाद्य (वीणा, सरोद, सितार, इसराज, गिटार, वायलिन और बाँसुरी)

पूर्णांक – 50

प्रथम प्रश्न पत्र– संगीत विज्ञान **अंक – 35**

1. परीक्षार्थी को तन्त्र वाद्य के प्रमुख घरानों का ज्ञान।
2. आधुनिक भारतीय संगीत का सविस्तार अध्ययन एवं इस काल के संगीत उद्धारकों की देन।
3. पाश्चात्य स्वरलिपि पद्धति का सामान्य ज्ञान एवं उत्तर भारतीय स्वरलिपि पद्धति से उसकी तुलना।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

पूर्णांक – 50

द्वितीय प्रश्न पत्र– रागों और तालों का अध्ययन **अंक – 35**

1. अधोलिखित रागों के आरोह, अवरोह, पकड़ मुख्य स्वर समुदाय एवं सम्पूर्ण विशेषतओं सहित विस्तृत तथा तुलनात्मक अध्ययन– चंद्रकौंस, पटदीप, बिहाग, मेघ मल्हार।
2. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में आलाप के माध्यम से राग पहचानने तथा रागों में अन्तर स्पष्ट करना।
3. वर्णित रागों की गतों को तोड़ों तथा झाला सहित स्वरलिपि में लिखना।
4. अधोलिखित तालों के ठेके तथा विभिन्न लयकारियों को लिखना–रूपक, तिलवाड़ा।

5. वाद्य वर्गीकरण तथा अपने वाद्य का पूर्ण ज्ञान।
6. निम्नलिखित संगीतज्ञों की जीवनी एवं उनकी देन–पं0 रवि शंकर, उस्ताद विलायत खाँ।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

क्रियात्मक परीक्षा

पूर्णांक – 50

प्रथम क्रियात्मक परीक्षा– **अंक – 35**

1. अधोलिखित रागों में रजाखानी गत, तोड़े तथा झाला सहित– चंद्रकौंस, पटदीप, बिहाग, मेघ मल्हार।
2. उपर्युक्त वर्णित रागों में से किसी एक राग में मसीतखानी गत तथा तोड़े।
3. पाठ्यक्रम के वर्णित रागों में से किन्हीं दो रागों में आलाप एवं जोड़ आलाप बजाना।
4. वर्णित किन्हीं दो रागों में एक लाइट धुन बजाना।
5. निम्नलिखित तालों को ठाह, दुगुन, तिगुन और चौगुन में ताली देकर बजाना–रूपक, तिलवाड़ा।

द्वितीय क्रियात्मक परीक्षा– मौखिक **अंक – 15**

भारतीय संगीत शास्त्र

वाद्य संगीत

बी. ए. षष्टम सेमेस्टर

सत्र : 2017–18 से प्रभावी

वर्ग अ : तन्त्र एवं सुषिर वाद्य (वीणा, सरोद, सितार, इसराज, गिटार, वायलिन और बाँसुरी)

पूर्णांक – 50

प्रथम प्रश्न पत्र– संगीत विज्ञान **अंक – 35**

1. पाश्चात्य संगीत सम्बन्धी पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान– टाइम सिगनेचर, स्वर सप्तक और कार्ड (Chord)।
2. भारतीय संगीत में सांगीतिक और असांगीतिक ध्वनियां एवं प्रतिध्वनि का अध्ययन।
3. संगीत सम्बन्धी विषयों पर संक्षिप्त निबन्ध लिखना।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

पूर्णांक – 50

द्वितीय प्रश्न पत्र– रागों और तालों का अध्ययन

अंक – 35

1. अधोलिखित रागों के आरोह, अवरोह, पकड़ मुख्य स्वर समुदाय एवं सम्पूर्ण विशेषताओं सहित विस्तृत तथा तुलनात्मक अध्ययन– मियां मल्हार, केदार, हमीर, पूरिया।
2. पाठ्यक्रम के निर्धारित रागों में आलाप के माध्यम से राग पहचानने तथा रागों में अन्तर स्पष्ट करना।
3. वर्णित रागों की गतों को तोड़ों तथा झाला सहित स्वरलिपि में लिखना।
4. अधोलिखित तालों के ठेके तथा उनकी विभिन्न लयकारियों को लिखना–पंचम सवारी, सूलताल।
5. तन्त्रवाद्यों का भारत में क्रमिक विकास।
6. निम्नलिखित संगीतज्ञों की जीवनी एवं उनकी देन–हाफिज़ अली खाँ, निखिल बनर्जी।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

क्रियात्मक परीक्षा

पूर्णांक – 50

प्रथम क्रियात्मक परीक्षा– **अंक – 35**

1. अधोलिखित रागों में रजाखानी गत, तोड़े तथा झाला सहित–
   मियां मल्हार, केदार, हमीर, पूरिया।
2. उपर्युक्त वर्णित रागों में से किसी एक राग में मसीतखानी गत तथा तोड़े।
3. पाठ्यक्रम के वर्णित रागों में से किन्हीं दो रागों में आलाप और जोड़ आलाप बजाना।
4. वर्णित किन्हीं दो रागों में एक लाइट धुन बजाना।
5. निम्नलिखित तालों को ठाह, दुगुन, तिगुन, चौगुन में ताली देकर बजाना– पंचम सवारी सूलताल।

द्वितीय क्रियात्मक परीक्षा– मौखिक **अंक – 15**

कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल
सेमेस्टर पाठ्यक्रम (बी.ए.)
भारतीय संगीत शास्त्र
वर्ग–ब : (वाद्य संगीत)
सत्र : 2017–18 से प्रभावी

महत्वपूर्ण निर्देश :– भारतीय संगीत शास्त्र वर्ग ब (वाद्य संगीत) के विद्यार्थियों के लिए दो सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र एवं एक प्रयोगात्मक (क्रियात्मक) परीक्षा अनिवार्य है।

7. सैद्धान्तिक प्रथम प्रश्न पत्र – संगीत विज्ञान — पूर्णांक – 50
   - सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र — अंक – 35
   - आन्तरिक मूल्यांकन — अंक – 15

8. सैद्धान्तिक द्वितीय प्रश्न पत्र – तालों का अध्ययन — पूर्णांक – 50
   - सैद्धान्तिक प्रश्न पत्र — अंक – 35
   - आन्तरिक मूल्यांकन — अंक – 15

9. क्रियात्मक परीक्षा – — पूर्णांक – 50
   - प्रथम क्रियात्मक परीक्षा — अंक – 35
   - द्वितीय क्रियात्मक परीक्षा : मौखिक — अंक – 15

भारतीय संगीत शास्त्र
वाद्य संगीत
बी0 ए0 प्रथम सेमेस्टर
सत्र : 2017–18 से प्रभावी

वर्ग ब : अवनद्व वाद्य (तबला और पखावज)

पूर्णांक – 50

प्रथम प्रश्न पत्र – संगीत विज्ञान **अंक – 35**

1 संगीत की परिभाषा और उसके अंग।
2 सांगीतिक और असांगीतिक ध्वनियाँ एवं प्रतिध्वनि।
3 ताल की परिभाषा के विषय में विभिन्न विद्वानों के विचार।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

पूर्णांक – 50

द्वितीय प्रश्न पत्र– तालों का अध्ययन **अंक – 35**

1 अधोलिखित शब्दों की परिभाषा – आड़, कुआड़, बिआड़, कायदा, पलटा, रेला , मोहरा, मुखड़ा, टुकड़ा, चक्करदार, परन, उठान, सम, विषम, अतीत और अनागत ,तिपल्ली, चौपल्ली, लोम– विलोम।
2 भातखण्डे तथा विष्णु दिगम्बर ताल लिपि पद्वतियों में कायदे , परन, उठान, तिहाई एवं रेला लिखने का अभ्यास।
3 तीनताल, झपताल, तिलवाड़ा, रूद्र ताल को विभिन्न लयकारियों में लिखने का अभ्यास।
4.निम्नलिखित वादकों की जीवनियां एवं उनकी देन–कण्ठे महाराज, अहमद जान थिरकुवा।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

क्रियात्मक परीक्षा

पूर्णांक – 50

प्रथम क्रियात्मक परीक्षा– **अंक – 35**

1. तीनताल, को सविस्तार बजाना जिसमें पेशकार विभिन्न शैलियों के पाँच–पाँच कायदे पल्टों सहित, दो गत, मुखड़ा, दो रेला और पाँच टुकड़े आवश्यक हैं।
2. तीनताल, झपताल, तिलवाड़ा, रूद्र तालों के ठेकों को तबले पर बजाना एवं हाथ से ताल देकर बोलना।
3. अधोलिखित तालों के ठेके सीखना और उन्हें ताली देकर बराबर दुगुन तथा चौगुन की लयकारियों में बोलना–झूमरा, पंजाबी।
4. तबला और पखावज वाद्य के विद्यार्थियों को सोलो वादन के अतिरिक्त संगत की योग्यता अपेक्षित।

   नोट : पाठ्यक्रम में दिये गये प्रत्येक ताल का पूर्ण परिचय अर्थात् प्रयोग विधि तथा प्रयोग सामग्री जानना आवश्यक है।

द्वितीय क्रियात्मक परीक्षा–मौखिक **अंक – 15**

भारतीय संगीत शास्त्र
वाद्य संगीत
बी0 ए0 द्वितीय सेमेस्टर
सत्र : 2017–18 से प्रभावी

वर्ग ब : अवनद्व वाद्य (तबला और पखावज)

पूर्णांक – 50

प्रथम प्रश्न पत्र – संगीत विज्ञान **अंक – 35**

1.ताल के दस प्राणों का विस्तृत अध्ययन।
2.भारत में अवनद्ध वाद्यों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि।

3.संगीत सम्बन्धी सामान्य विषयों पर संक्षिप्त निबन्ध लिखने का अभ्यास।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

पूर्णांक – 50

द्वितीय प्रश्न पत्र– तालों का अध्ययन **अंक – 35**

1.बसन्त, गजझम्पा, चौताल और धमार ताल को विभिन्न लयकारियों में लिखने का अभ्यास।

2.समान मात्राओं के विभिन्न तालों का तुलनात्मक अध्ययन।

3.सोलो वादन एवं संगति करने का सिद्धान्त।

4.भारत के विभिन्न अवनद्ध वाद्यों की उपयोगिता और प्रयोग।

5.ताल रचना के सिद्धान्त।

6.निम्नलिखित वादकों की जीवनियां एवं उनकी देन–खलीफा आबिद हुसैन, अल्लारक्खा खाँ।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

क्रियात्मक परीक्षा

पूर्णांक – 50

प्रथम क्रियात्मक परीक्षा– **अंक – 35**

1. झपताल को सविस्तार बजाना, जिसमें पेशकार विभिन्न शैलियों के पाँच–पाँच कायदे पलटों सहित, दो गत, मुखड़ा, दो रेला और पाँच टुकड़े आवश्यक हैं।
2. बसन्त, गजझम्पा, चौताल और धमार ताल के ठेकों को तबले पर बजाना एवं हाथ से ताल देकर बोलना।
3. चारताल तथा धमार ताल को पखावज अंग से बजाना एवं उनमें टुकड़े और परन बजाने की क्षमता।
4. अधोलिखित तालों के ठेके सीखना और उन्हें ताली देकर बराबर दुगुन तथा चौगुन की लयकारियों में बोलना–मतताल, शिखरताल।
5. तबला और पखावज वाद्य के विद्यार्थियों को सोलो वादन के अतिरिक्त संगत करने की योग्यता अपेक्षित।

   नोट : पाठ्यक्रम में दिये गये प्रत्येक ताल का पूर्ण परिचय अर्थात् प्रयोग विधि तथा प्रयोग सामग्री जानना आवश्यक है।

द्वितीय क्रियात्मक परीक्षा–मौखिक **अंक – 15**

भारतीय संगीत शास्त्र
वाद्य संगीत
बी0 ए0 तृतीय सेमेस्टर
सत्र : 2017–18 से प्रभावी

वर्ग ब : अवनद्व वाद्य (तबला और पखावज)

पूर्णांक – 50

प्रथम प्रश्न पत्र – संगीत विज्ञान **अंक – 35**

1. तबला और पखावज के विभिन्न घराने तथा बाज एवं उनका तुलनात्मक अध्ययन।
2. कर्नाटक ताल पद्धति का सविस्तार अध्ययन।
3. पाश्चात्य् संगीत में प्रयोग होने वाले अधोलिखित शब्दों की परिभाषा– क्लैफ (Claf), रिद्म (Rhythm),।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

पूर्णांक – 50

द्वितीय प्रश्न पत्र– तालों का अध्ययन **अंक – 35**

1. अधोलिखित शब्दों की परिभाषा–लग्गी, बांट, लड़ी, गत।
2. कंठ संगीत, वाद्य संगीत और नृत्य के साथ संगीत करने के सिद्धान्तों का अध्ययन।
3. दिये गये बोलों को पढ़कर ताल पहचानने की क्षमता।
4. अधोलिखित तालों को विभिन्न लयकारियों में लिखना तथा विभिन्न लयकारियों में से किसी ताल से आवर्त को प्रारम्भ करने के स्थान का पता लगाना– आड़ा चौताल, पंचम सवारी, रूद्र ताल।
5. निम्नलिखित तबला वादकों की जीवनी और उनकी देन– उस्ताद करामतउल्ला खाँ, इबिबुद्दीन खाँ।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

क्रियात्मक परीक्षा

पूर्णांक – 50

प्रथम क्रियात्मक परीक्षा– **अंक – 35**

1. एकताल को विस्तार में सीखना, जिसमें पेशकार, तीन कायदे, पलटों सहित एक गत, पाँच टुकड़े, एक रेला और एक परन तथा एक चक्करदार परन।
2. रूद्रताल और ब्रहमताल को ताल देकर बोलना।
3. सूलताल में दो परन, दो टुकड़े और दो तिहाईयाँ।
4. तबला और पखावज लेने वाले विद्यार्थियों को सोलो वादन तथा संगत करने का अभ्यास अपेक्षित।

द्वितीय क्रियात्मक परीक्षा–मौखिक **अंक – 15**

भारतीय संगीत शास्त्र
वाद्य संगीत
बी0 ए0 चतुर्थ सेमेस्टर
सत्र : 2017–18 से प्रभावी

वर्ग ब : अवनद्व वाद्य (तबला और पखावज)

पूर्णांक – 50

प्रथम प्रश्न पत्र – संगीत विज्ञान **अंक – 35**

1. प्राचीन काल एवं मध्यकाल के भारतीय संगीत के इतिहास का संक्षिप्त ज्ञान।
2. पाश्चात्य् संगीत में प्रयोग होने वाले अधोलिखित शब्दों की परिभाषा– टाइम सिगनेचर (Time signature),साधारण काल (Simple Time) ड्यूपिल टाइम (Duple Time) ट्रिपल टाइम (Tripal Time), क्वाडरिपल टाइम (Quadruple Time),
3. हारमनी एवं मैलोडी में अन्तर।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

पूर्णांक – 50

द्वितीय प्रश्न पत्र– तालों का अध्ययन **अंक – 35**

1. अधोलिखित शब्दों की परिभाषा– कमाली तथा फरमाइशी चक्करदार परन, लोम–विलोम, नौहक्का।
2. दिये गये बोलों को पढ़कर ताल पहचानने की क्षमता।
3. विभिन्न गायन शैलियों के साथ विभिन्न तालों के प्रयोग का सिद्धान्त।
4. अधोलिखित तालों को विभिन्न लयकारियों में लिखना तथा विभिन्न लयकारियों में से किसी ताल से आर्वत को प्रारम्भ करने के स्थान का पता लगाना– फरोदस्त, अद्धा पंजाबी और शिखर।
5. निम्नलिखित तबला वादकों की जीवनी एवं उनकी देन–पं0 अनोखेलाल, नत्थू खाँ।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

क्रियात्मक परीक्षा

पूर्णांक – 50

प्रथम क्रियात्मक परीक्षा– **अंक – 35**

1. आड़ा चौताल और पंचम सवारी को विस्तार में सीखना, जिसमें पेशकार, तीन कायदे, पलटों सहित एक गत, पाँच टुकड़े एक रेला और एक परन तथा एक चक्करदार परन।
2. फिरोदस्त, अद्धा, पंजाबी और शिखर ताल को बोलना।
3. तीव्रा ताल में दो परन, दो टुकड़े और दो तिहाइयां।
4. पखावज एवं तबला लेने वाले विद्यार्थियों को सोलो वादन तथा संगत करने का अभ्यास अपेक्षित।

द्वितीय क्रियात्मक परीक्षा–मौखिक **अंक – 15**

भारतीय संगीत शास्त्र
वाद्य संगीत
बी0 ए0 पंचम सेमेस्टर
सत्र : 2017–18 से प्रभावी

वर्ग ब : अवनद्व वाद्य (तबला और पखावज)

पूर्णांक – 50

प्रथम प्रश्न पत्र – संगीत विज्ञान **अंक – 35**

1. आधुनिक भारतीय संगीत का विस्तार एवं इस काल के संगीत उद्धारकों की देन।
2. ताल सम्बन्धी भारतीय एवं पाश्चात्य संगीत में प्रयुक्त शब्दावलियों का आलोचनात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन।
3. तालों का वर्गीकरण (देशी ताल/मार्गी ताल) का सिद्धान्त।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

पूर्णांक – 50

द्वितीय प्रश्न पत्र– तालों का अध्ययन **अंक – 35**

1. प्रथम एवं द्वितीय वर्ष के पाठ्यक्रम में दी गयी तालों को विभिन्न लयकारियों में लिखना।
2. किसी भी एक ताल को दूसरी ताल में सम से सम तक लयकारी परिवर्तन के आधार पर लिखना।
3. विभिन्न तालों में तिहाई बनाने की क्षमता।
4. अधोलिखित संगीतज्ञों की जीवनी एवं उनकी देन–सामता प्रसाद, किशन महाराज।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

क्रियात्मक परीक्षा

पूर्णांक – 50

प्रथम क्रियात्मक परीक्षा– **अंक – 35**

1. एकताल को सविस्तार बजाना जिसमें पेशकार, तीन कायदे, पलटों सहित गत, पाँच टुकड़े, एक रेला और दो परन।
2. पंचम सवारी ताल में एक पेशकारा, एक कायदा, एक रेला, दो टुकड़े, एक गत और एक परन।
3. कहरवा ताल में लग्गी और लड़ी बजाना।
4. पाठ्यक्रम में वर्णित बोलों को ताली देकर बोलने का अभ्यास।
5. सूलताल में दो टुकड़े, दो परन तथा दो तिहाईयाँ।

द्वितीय क्रियात्मक परीक्षा–मौखिक **अंक – 15**

भारतीय संगीत शास्त्र
वाद्य संगीत
बी0 ए0 षष्टम सेमेस्टर
सत्र : 2017–18 से प्रभावी

वर्ग ब : अवनद्ध वाद्य (तबला और पखावज)

पूर्णांक – 50

प्रथम प्रश्न पत्र – संगीत विज्ञान **अंक – 35**

1. ताल और छन्द, उनका सम्बन्ध और तालोपयोगी विभिन्न छन्दों का ज्ञान।
2. संगीत रत्नाकर में वर्णित तालों का रूप एवं वर्तमान में परिवर्तनों का अध्ययन।
3. संगीत सम्बन्धी सामान्य विषयों पर निबन्ध लिखने का अभ्यास।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

पूर्णांक – 50

द्वितीय प्रश्न पत्र– तालों का अध्ययन **अंक – 35**

1. संगीत में समान मात्रा के तालों की आवश्यकता की पुष्टि एवं उनकी तुलना।
2. विभिन्न बोलों को तालों (पाठ्यक्रम में निर्धारित) में लिपिबद्ध करना।
3. अधोलिखित संगीतज्ञों की जीवनी एवं उनकी देन– बिरजू महाराज और नाना साहब पानसे।

आन्तरिक मूल्यांकन **अंक – 15**

क्रियात्मक परीक्षा

पूर्णांक – 50

प्रथम क्रियात्मक परीक्षा– **अंक – 35**

1. झपताल और आड़ा चौताल को सविस्तार बजाना जिसमें पेशकार, तीन कायदे, पलटों सहित गत, पाँच टुकड़े, एक रेला और परन।
2. रूपक ताल में एक पेशकारा, एक कायदा, एक रेला, दो टुकड़े, एक गत और एक परन।
3. दादरा ताल में लग्गी और लड़ी बजाना।
4. पाठ्यक्रम में वर्णित बोलों को ताली देकर बोलने का अभ्यास।
5. धमार ताल और गजझंपा ताल में दो टुकड़े, दो परन तथा दो तिहाइयां।
6. संगत करने की योग्यता और तबला मिलाने का ज्ञान।

द्वितीय क्रियात्मक परीक्षा–मौखिक **अंक – 15**

Type your text